आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:22-12-14

हम आत्माओं को अपनी याद से पावन बनाने वाले और ईश्वरीय ज्ञान से माया पर विजय दिलाने वाले, बेहद के पतित-पावन, ज्ञान-सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - सारा मदार याद पर है, याद से ही तुम आत्माये मीठे (पावन) बन जायेंगे, इस याद में ही माया की युद्ध चलती है.

बाबा ने हमारी याद की यात्रा पर समझाते हुए कहा, तुम आत्माये अभी पतित से पावन बनने के लिए मुझ पावन बाप को याद करते हो. तुम्हारी आत्मा याद करती है अपने स्वीट (सदा-पावन) बाप को. बाबा ने ही कहा हैं तुम मुझे याद करेंगे तो पावन सतोप्रधान बन जायेंगे. सारा मदार याद की यात्रा पर है. लेकिन माया की युद्ध भी याद की यात्रा में ही चलती है. कौन सी युद्ध? व्यर्थ और नेगेटिव संकल्पों की युद्ध. बाबा कहते है यह तुम्हारी याद की यात्रा नहीं परन्तु जैसे कि लड़ाई है, इसमें बहुत खबरदार रहना है. ज्ञान में माया का तूफ़ान नहीं आता लेकिन याद में ही माया बड़ा तूफ़ान खड़ा कर तुम्हें गिरा देती है. माया कैसे याद में तूफ़ान लाती है? जैसे ही निराकार बाप को याद करने के लिए सभी संकल्प-विकल्प मर्ज करके बाप की याद में बैठते है तो सबसे पहले तूफ़ान आता है - देह-अभिमान का. क्योंकि लास्ट ६३ जन्मो से हम आत्माये देह-अभिमानी होकर रहे हैं. होना तो यह चाहिए कि भले हमारी आँखें खुली हो लेकिन हमारी दिव्य-बुद्धि से हम दिलाराम-बाप को परमधाम में या सूक्ष्मवतन में सम्पूर्ण ब्रह्मा की आँखों में - भृकुटी में देखे. लेकिन हमारा देह-अभिमान हमारे सामने रखी स्थूल चीजें देखने में वा परचिंतन-परदर्शन के संकल्पों-विकल्पों में लग जाती है. सच्ची याद तो वह जब आत्मा अपने स्थूल शरीर को भी भूल परमधाम में बाप के साथ या सूक्ष्मवतन में बाप-दादा के साथ मिलन में, मीठी-मीठी रुह-रीहान में अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करें, आत्मा शक्ति का अनुभव करें. ऐसी याद में आत्मा लंबे समय टिक नहीं सकती क्योंकि माया बहुत विघ्न लाती है. कामनाये (इच्छाये), क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार यह सब माया के हथियार है जो माया युज करके योगी आत्मा को गिरा देती है. बाबा की याद को पक्का करना है तो आत्मा को बेहद के बाप से बेहद का रुहानी प्यार होना चाहिए. क्योंकि जिसको दिल में बैठा दिया उसे आत्मा बड़े प्यार से याद करती रहेगी. उसको याद करें बिना रह भी नहीं सकेगी. याद में ही स्नेह के आंसू भी आ जायेंगे. ऐसे ही याद करते हमारी आत्मा पावन बन जायेगी.

आज की मुरली में बाबा ने आत्माओं के इस बेहद के ड्रामा में पार्ट पर बहुत राज (Razz) खोले है. ड्रामा में आत्माओं के पार्ट के बारे में बाबा ने जो पॉइन्ट्स बताई हैं - उसे एक बार रिपिट कर लेंगे.

- परमात्मा की आत्मा और धर्मस्थापको की आत्मा ऊपर से डायरेक्ट आती है. लेकिन परमात्मा की आत्मा ज्ञान देकर वापस परमधाम चली जाती है जब की अन्य धर्म-स्थापको की आत्माये दूसरा जन्म यहाँ पर लेकर अपने धर्म की पालना करती है.

- परमात्मा की आत्मा, ब्रह्मा के तन द्वारा ही ज्ञान सुनाती हैं. ब्रह्मा का तन ही उनका रथ बनता है.

- ड्रामा के शुरू में आत्माये बहुत कम होती हैं. सतयुग के शुरु में 9 लाख, सतयुग अन्त तक 2 करोड और त्रेता के अन्त तक 33 करोड.

- इस ड्रामा में जो आत्मा ऊपर से एक बार नीचे पार्ट बजाने आ जाती हैं, वह आत्मा फिर से वापस अपने घर (परमधाम) ड्रामा के बीच में नहीं जा सकती.

- इस बेहद के ड्रामा में सभी आत्माओं को पार्ट बजाना ही हैं, किसी का एक-दो जनम का पार्ट हे, तो हम बच्चों का पूरा 84 जन्मो का पार्ट हैं. किसी को मोक्ष नहीं मिलता.

- इस बेहद के ड्रामा में आत्माओं की वृद्धि, शुरू से अन्त तक होती ही रहती हैं.

- आत्माओं का झाड़ कभी सुखता नहीं हैं. बाबा ने बताया हैं की दोनों स्थान, परमधाम और विश्व का रंगमंच, आत्माओं से कमप्लेट सुख नहीं जाता हैं.

- इस ड्रामा में एक आत्मा का पार्ट दूसरी आत्मा से नहीं मिलता.

- इस ड्रामा में हर एक आत्मा को एक पार्ट एक ही बार बजाने के लिए मिलता है. कोई भी आत्मा एक ही पार्ट दो बार बजा नहीं सकती. श्रीकृष्ण की आत्मा का पार्ट सतयुग के शुरु में ही है फिर सारे कल्प में वह आत्मा फिर से श्रीकृष्ण का पार्ट नहीं बजायेगी. यह बात मुझे सिखलाती है कि मुझे ऐसा पुरुषार्थ अभी करना है जिसे की मेरा पार्ट श्रीकृष्ण के साथ सतयुग के आरंभ में हो तब ही में श्रीकृष्ण के साथ इस धरा पर पार्ट बजाने का भाग्य ले सकूंगा.

ॐ शांति.

Please feel free to contact Atma Bhai for any questions on a.brahmin.soul@gmail.com .